सारांश (Abstract)

सारांश (Abstract)

सम्पूर्ण संसार एक गतिशील सत्ता है और संसार की तमाम व्यवस्थाएँ परिवर्तन की दौर से गुज़रती हैं; परंतु आज जो बदलाव हो रहा है, वह पहले से कहीं अधिक तीव्र गति के साथ घटित हो रहा है। आज समय बहुत तेज़ी से बदल रहा है और बदलते हुए समय के यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक स्थितियों का विघटन हो रहा है। इसमें आस्थाएं, आकांक्षाएं, मूल्य और मान्यताएँ सभी तेज़ी से बदल रहे हैं। स्थितियों के इस तरह के बदलाव का मूल कारण है- भूमंडलीकरण। आज सारी दुनिया को एक जैसा बनाने की बात की जा रही है, संसार भर में एकरूपता लाने की बात हो रही है; परन्तु यह कोई नयी चीज़ नहीं है। इसकी जड़ें बहुत पहले से ही भारतीय वाङ्मय में विद्यमान हैं और अब तक कायम भी हैं। एक बहु-प्रसिद्ध उक्ति है-' वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देख जाना और उसे अपना कुटुंब मान कर चलना। इसके अलावा यह भी कहा जाता है कि- ' कृण्वंतोविश्वमार्यम्' अर्थात् सारे संसार को संस्कारित कर श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करना। परंतु अर्वाचीन भूमंडलीकरण या वैश्वीकरण की अवधारणा इससे बहुत अलग है और इसमें अब एक नया विशेषण जुड़ गया है नव-उदारवादी भूमंडलीकरण, जो दुनियां के सारे देशों को मंडी में तब्दील कर देना चाहता है। एक ऐसी दुनिया, जो मंडी मात्र ही नहीं, अपितु उसका संचालन भी मंडी की आंतरिक ताक़तों के द्वारा ही होता है। इस संदर्भ में देखा जाए तो वेदों में व्यक्त उपर्युक्त बातें व्यर्थ सिद्ध हो जाती हैं। नव-उदारवादी भूमंडलीकरण का दूर-दूर तक उदारता से कोई लेना-देना नहीं है।

समकालीन रचनाकारों में हिंदी साहित्य के शिखर के रूप में उदय प्रकाश का नाम लिया जाता है। आप बहुआयामी, बहुमुखी, विलक्षण प्रतिभा के धनी-मानी हैं। आपका कृतित्व भी बहुआयामी है। वर्तमान साहित्यिक परिदृश्य में आप स्वयं एक अवधारणा हैं। वैसे तो साहित्य में विभिन्न अवधारणाओं का समय-समय पर आवागमन होता रहता है, परंतु किन्हीं वैचारिकताओं का साहित्य पर गहरा असर पड़ता है। आधुनिक काल में ऐसी वैचारिकताओं में आधुनिकतावाद, मार्क्सवाद, संरचनावाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, उत्तर आधुनिकतावाद, नव-मार्क्सवाद, उत्तर-संरचनावाद, नव-उपनिवेशवाद, भूमंडलीकरण आदि प्रमुख हैं; परंतु इनमें से भूमंडलीकरण एक ऐसी अवधारणा है, जो सबको अपने आप में समेटे हुए है। आज भूमंडलीकरण एक ऐसी अवधारणा या प्रवृत्ति का नाम है, जो सभी विचारधाराओं और अवधारणाओं को प्रभावित कर रही है। 'उदय प्रकाश का कथा-साहित्य : भूमंडलीकरण का परिप्रेक्ष्य' विषय पर शोध-कार्य करने के क्रम में उपर्युक्त विचारधाराओं और अवधारणाओं की पहचान समय के लिहाज से बहुत जरूरी है। इसी सिलसिले में उदय प्रकाश की रचनाओं का अध्ययन करते हुए यह शोध कार्य प्रस्तुत किया गया है। उक्त विषयक शोध-प्रबंध आठ अध्यायों में विभक्त है।

प्रथम अध्याय 'उदय प्रकाश : समय के बरअक्स व्यक्ति और समाज' से संबंधित है। इसके प्रथम चरण 'उदय प्रकाश का व्यक्तित्व' में रचनाकार का जन्म एवं परिचय, पारिवारिक पृष्ठभूमि, रचनाकार की साहित्य-सृजन के प्रति रुचि तथा पुरस्कार और सम्मान आदि तथ्यों का संक्षिप्त विवेचन किया गया है। दूसरे चरण 'उदय प्रकाश का कृतित्व' के अंतर्गत कवि के रूप में, कहानीकार के रूप में उदय प्रकाश की सृजनशीलता पर विचार एवं विश्लेषण किया गया है। उनकी अन्यान्य

कृतियों में उनकी विभिन्न पुस्तकें, अनुवाद कार्य, फिल्म और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में उनका योगदान, जीविका-उपार्जन हेतु विभिन्न समय विभिन्न दायित्वों का निर्वहन, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियाँ, व्याख्यान और विभिन्न देशों की यात्राएं आदि को विस्तार से समझने की प्रचेष्टा की गई है।

द्वितीय अध्याय 'प्रवृत्तियों-सिद्धांतों के आईने में भूमंडलीकरण' से संबंधित है। 'भूमंडलीकरण' को स्पष्ट करते हुए विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं के माध्यम से उसकी सम्यक विवेचना करने का प्रयास किया गया है। इसके साथ भूमंडलीकरण की विचारधाराओं से संबंधित विचारों एवं प्रवृत्तियों को स्पष्ट करते हुए विभिन्न विद्वानों द्वारा दिये गए विवेचनाओं के आधार पर परखा गया है। इसकी अवधारणा पर चर्चा करते हुए इसके षड़यंत्रों पर व्यापक प्रकाश डाला गया है। साथ-साथ इसके भ्रामक चरित्र को भी विस्तार से समझने का प्रयत्न किया गया है। आज का जो समय है वह भूमंडलीकरण का है। उसका प्रभाव भारत पर पड़ना स्वाभाविक है। भूमंडलीकरण के वर्तमान युग में किसी देश का अपना मौलिक यथार्थ नहीं रह गया है। इसी दृष्टि से इसे परखने की चेष्टा की गई है। इस क्रम में इसके साथ ही बदलते जीवन संदर्भ पर विस्तार से विचार और विश्लेषण किया गया है।

तृतीय अध्याय 'भूमंडलीकरण और उदय प्रकाश के कथा-साहित्य का वर्गगत चरित्र' से संबंधित है। इसमें समाज का आर्थिक स्तरीकरण और उसके वर्गीय ढांचे की रूपरेखा को स्पष्ट करने की कोशिश की गयी है। पूंजी आधारित उच्चवर्ग की शोषण की प्रवृत्ति को यहाँ रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। इसमें मध्यवर्ग की महत्त्वाकांक्षाओं एवं लालसाओं पर विचार-विश्लेषण कर उसकी आर्थिक तंगहाली एवं त्रासदीपूर्ण जीवन को विविध आयामों से परखने का प्रयास किया गया है। वर्तमान भारतीय समाज में आज वे लोग हाशिये के लोग हैं, जो राष्ट्रीय विकास की मुख्यधारा

के भीतर और बाहर दोनों ही रूपों में हाशिये पर जीवन जीने के लिए विवश कर दिए गए हैं। ये वे हैं, जिन्हें केंद्र ने परिधि से बाहर निकाल दिया है। वे निम्न-मध्यवर्ग और निम्न वर्ग के लोग ही तो हैं, जिन्हें सत्ता केंद्रों ने राष्ट्रीय जीवन की मुख्यधारा से बाहर निकाल कर हाशिये पर जीने के लिए विवश कर दिया है।

'भूमंडलीय समाजार्थिक यथार्थ और उदय प्रकाश का कथा-साहित्य' नामक चतुर्थ अध्याय में उदय प्रकाश के कथा-साहित्य के सामाजिक परिदृश्य में जनसाधारण के सुख-दु:ख, हर्ष-विषाद, आकर्षण-विकर्षण तथा सामाजिक व्यवस्था-तंत्र के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। सामाजिक जटिलताओं में छल-कपट, न्याय-अन्याय, शोषण-अत्याचार, घूसख़ोरी में, दलाली आदि को उदय प्रकाश का कथाकार आड़े हाथों लेता है। भ्रष्टाचार और व्यवस्था तंत्र की पतनशीलता को उनकी कहानियों में बखूबी दर्शाया गया है। हमारा समय और रचनाकार उदय प्रकाश का दृष्टिकोण वर्तमान सामाजिक व्यवस्था-तंत्र के परिप्रेक्ष्य में उदय प्रकाश की देन को देखने का लघु प्रयास करता है। उदय प्रकाश के कथा-साहित्य के मार्फत सांस्कृतिक परिदृश्य एवं आर्थिक परिदृश्य पर भी यहाँ आलोकपात किया गया है।

पञ्चम अध्याय 'भूमंडलीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति में मूल्यों का प्रश्न और उदय प्रकाश का कथा-साहित्य' से संबंधित है। इसमें भूमंडलीय उपभोक्तावादी सांस्कृतिक परिदृश्य पर गहन विचार-विमर्श हुआ है। भूमंडलीकरण के दौर में उपभोक्तावादी संस्कृति का बढ़ता वर्चस्व मानवीय मूल्यों पर हावी है। उपभोक्तावादी संस्कृति में सिर्फ उपभोग को ही बढ़ावा दिया जाता है और उपभोक्ताओं के आधार पर मानवीय गुणों का विचार होता है। अर्थ पर आधारित उपभोक्तावादी संस्कृति में मानवीय मूल्यों की कोई कद्र नहीं, बल्कि उपभोक्तावादी संस्कृति के साथ मानवीय मूल्यों की टकराहट ही सामाजिक यथार्थ की भूमि पर भयंकर रूप लेती दृष्टिगोचर

होती है और इन्हीं सबों का उदय प्रकाश के कथा-साहित्य के आधार पर यहाँ निरूपण किया गया है।

षष्ठ अध्याय 'भूमंडलीकरण की प्रवृत्तियों के संदर्भ में उदय प्रकाश के पात्र' से संबंधित है। इसके अंतर्गत रचनाकार के पात्रों के परिवेश को स्पष्ट करते हुए उदय प्रकाश के साहित्य के विभिन्न कथा पात्रों के चयन एवं उस चयन की पृष्ठभूमि पर आलोक पात किया गया है। उदय प्रकाश अपनी कहानियों के लिए पात्रों का चयन अपने समय और समाज के इर्द-गिर्द बसे आम आदमी के बीच से करते हैं, जिसे भूमंडलीय संस्कृति ने चारों ओर से ठगा ही है।

सप्तम अध्याय 'भूमंडलीकरण के दौर में विचारधारा का प्रश्न और उदय प्रकाश का कथा-साहित्य' से संबंधित है। भूमंडलीकरण के यथार्थ स्वरूप पर विचार-विश्लेषण करते हुए इसके द्वारा दुनिया को विश्वग्राम बनाने के सपने को भी विस्तार से यहाँ देखा-सुना गया है। वर्तमान समाज सत्ता केंद्रित भूमंडलीय संस्कृति के माया जाल में फँसकर विकृत हो गया है। यहाँ चारों ओर भय, भ्रम, खून, अन्याय, अपराध, दंगे, दौलत, लालच, दलाली, बेईमानी, लूट-खसोट, जालसाजी, अराजकता आदि का साम्राज्य है। वस्तुत: भूमंडलीकरण ने आज समाज में अराजकता और असमानता को बढ़ावा दिया है। भूमंडलीकरण पर विचार करने के क्रम में विभिन्न विचारधाराओं जैसे-आधुनिकतावाद, उत्तर आधुनिकतावाद, मार्क्सवाद, नव-मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, आदि का संक्षिप्त विश्लेषण भी यहाँ किया गया है। भूमंडलीकरण और इन विचार-सरणियों का हिंदी साहित्य पर क्या प्रभाव है, उस पर भी यहाँ विचार-विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही उदय प्रकाश की कहानियों के वैचारिक पक्ष को यहाँ रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

अंत में 'उपसंहार' के माध्यम से संपूर्ण अध्ययन और विचार-विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों का विवेचन किया गया है। इसमें रचनाकार उदय प्रकाश के व्यक्तित्व और उनके संपूर्ण रचना-संसार का सिंहावलोकन कर उसकी हिंदी साहित्य-जगत में महत्त्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

उदय प्रकाश के बिना हिंदी कथा साहित्य का लोक अधूरा प्रतीत होता है। वे हिंदी कथा साहित्य के समकालीन चेहरे की नाक हैं। उन्होंने हिंदी कहानी के कथ्य एवं शिल्प को अद्‌भुत रूप से परिवर्तित करने का प्रयास किया। वे अपने समय एवं अपने समय की भाषा में धँसे कथाकार हैं। समकालीन यथार्थ की उनकी समझ प्रशंसनीय है। युवा हिंदी कथा लेखन पर उनकी शैली एवं तकनीक का प्रभाव किसी से भी नहीं छिपा है। वे सचमुच समकालीन हिंदी कहानी के लिए मील का पत्थर हैं।

सधन्यवाद !